गीत

अंधियारी राहों में, मैं दीप जलाने आया हूँ।
जो भी चलेंगे लगेंगे कांटे धैर्य बँधाने आया हूँ।।
झंझावातें बार–बार नित बल अपना हैं दिखलाती,
पलकें ठौर बदल देतीं, औ जीना टीसें सिखलाती।
आशा के अनुरुप, दवा सँग काँटा लेने आया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।
सीख मानते,सीख–सीख जो, चलते जाते रुकें नहीं,।
थक जायें,राहत के खातिर, शूल निकालें बकें नहीं।।
ढ़ोंग कुरीति हृदय से त्यागें भान कराने आया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।
मन मनमानी करेगा हरदम चाहे चाह नहीं बोये,।
उजियारे उजियारे को ही,जान जान कर ना खोये।।
जैसा करेंगे पायें वैसा वैसे वैसे छाया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।
फँसे हुये हैं निकल न पाये जाल बड़ा है बेढंगा,
जितना भागे उलझे उतना राजा हो या भिखमंगा।
खोया समय कभी ना आये, याद दिलाने आया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।
विश्वासी हों,अन्ध विश्वासी, वर पा पा कर नहीं भर्जे,
बन्दन बन्धन हो हो जायें रात चांदनी नहीं तर्जे।
विघ्न ना जाये जान दूर हो युक्ति बताने आया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।
नेह तेल बाती मानवता परिवेशी दीपक जाने,
याद रहे पर सा दुख अपना ज्ञान मुक्ति जाने माने।
'अविनाशी' नित ज्योति,स्वयं ही,नहीं दीप,ना साया हूँ।
अंधियारी राहों.....।।

डा० देवकीन 'अविनाशी'